लेखन ग़लतियाँ और उनका विश्लेषण

मीनू पालीवाल

यह लेख बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के सन्दर्भ में है। शिक्षकों से इस विषय पर हुई बातचीत का हवाला देते हुए लेखिका बताती हैं कि आज भी कक्षा में पढ़ना-लिखना सिखाने के दौरान ज़ोर समझ और विचार पर नहीं बल्कि शुद्धता पर रहता है, और बच्चे के हर प्रयास में कुछ सही देखने की बजाय ग़लतियों पर ही ध्यान जाता है। वे कहती हैं कि इस दृष्टिकोण को बदलना होगा। वे बच्चों के साथ किए गए काम के उदाहरण लेकर दर्शाती हैं कि लिखना-पढ़ना सिखाने के लिए किस तरह के तरीक़े मददगार हो सकते हैं और कैसे। वे यह भी कहती हैं कि लिखना-पढ़ना सिखाने के पारम्परिक तरीक़ों को बिना सोचे-समझे अपनाने की बजाय, उनको जाँच-परख कर, उनमें ज़रूरी बदलाव कर काम में लिया जाए तो सीखने की सम्भावनाएँ बढ़ सकती हैं। सं.

आज भी देश में बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना एक बहुत बड़ी चुनौती के रूप में हमारे सामने है। देशभर में बहुत-से बच्चे सालों तक स्कूल में रहकर भी पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाते हैं। इस समस्या के कारणों का पता करने की बहुत आवश्यकता है। बच्चों के पढ़ना-लिखना न सीख पाने के बहुत-से कारक हैं। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण कारक बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए अपनाए जाने वाले तरीक़े और मान्यताएँ हैं। परन्तु पढ़ना सिखाने के तरीक़ों पर विचार करने के बजाय अकसर बच्चों के पढ़ना नहीं सीख पाने का दोषारोपण बच्चों पर ही कर दिया जाता है। अपने इस आलेख में मैं शिक्षकों के एक समूह से हुई बातचीत आपसे साझा कर रही हूँ। यह समूह कक्षा 6 से 8 के बच्चों को हिन्दी विषय पढ़ाने वाले 20-25 शिक्षकों का था।

यहाँ मैं बातचीत के उस अंश को जस का तस उद्धृत कर रही हूँ जिसके आधार पर आगे विश्लेषण किया जा सकेगा।

चर्चा

सुगमकर्ता : आपको हिन्दी भाषा पढ़ाने में किस तरह की परेशानी आती है?

ज़्यादातर शिक्षक : बच्चों को लिखना नहीं आता।

सुगमकर्ता : क्या जो बच्चे ठीक से लिख नहीं पाते वो प्रवाह से पढ़ लेते हैं?

शिक्षक : नहीं।

सुगमकर्ता : क्या यह कह सकते हैं कि तकलीफ़ लिखने में नहीं, पढ़ने में है।

शिक्षक : बेहतर पढ़ने वाले छात्र भी लिखने में बहुत ग़लतियाँ करते हैं।

सुगमकर्ता : क्या हम संक्षिप्त में बता सकते हैं वे किस प्रकार की ग़लतियाँ करते हैं।

शिक्षक : बड़ी ई, छोटी इ, बड़ा ऊ, छोटा उ, श, क्ष, ष, स को लिखने में ग़लतियाँ करते हैं?

सुगमकर्ता : श, क्ष, ष, स क़िस्म की ग़लतियाँ वोकल कॉर्ड्स पर क्षेत्रीयता और वातावरण के असर के कारण भी होती हैं और इनके अदल-बदल जाने से वाक्य का मतलब नहीं बदल जाता है। इसलिए इनपर बहुत परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। हम आगे के सत्र में विज़ुअल मेमोरी पर बात करेंगे जो इन अक्षरों के अन्तर को समझने और मुख्य रूप में पढ़ना सीखने में उपयोगी हो सकती है।

सुगमकर्ता : (पहली दो ग़लतियों—बड़ी ई, छोटी इ, बड़ा ऊ, छोटा उ—के सन्दर्भ में पूछा गया) इस कमरे में हममें से ऐसे कितने लोग हैं जिन्हें 2-3 पन्ने का कोई निबन्ध लिखना पड़े और बड़ी ई, छोटी इ, बड़ा ऊ, छोटा उ आदि की कोई ग़लती न हो?

सिर्फ़ 5 प्रतिभागियों ने हाथ उठाया।

सुगमकर्ता : यह प्रश्न पूछने का मेरा उद्देश्य सिर्फ़ इतना है कि ग़लतियों के डर की वजह से कहीं बच्चे लिखने से ही न डरने लगें। हम ज़रूर ग़लतियों को सुधारने पर काम करें, परन्तु पहले निश्चित कर लें कि कोई चूक असल में ग़लती है भी या नहीं। उस चूक का कारण क्या है? ग़लतियों के इस विश्लेषण से हमें उस ग़लती पर किस तरह काम करना है यह समझने में मदद मिलेगी।

सुगमकर्ता : विचार ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है या व्याकरण?

शिक्षक : विचार ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है।

सुगमकर्ता : मान लीजिए, एक बच्ची ने एक वाक्य को पढ़ा— रमा ने चप्पल पहनी। जबकि वाक्य कुछ इस तरह लिखा था— रमा ने चप्पल पहन ली। यहाँ बच्ची ने 'पहन ली' को 'पहनी' शब्द से बदल दिया। क्या आप यहाँ इस बच्ची को ठीक से पढ़ने के लिए टोकेंगे?

शिक्षक : हाँ।

सुगमकर्ता : क्यों?

शिक्षक : बच्ची ने ग़लत पढ़ा है।

सुगमकर्ता : पढ़ना क्या है?

शिक्षक : लिखित सामग्री से अर्थ प्राप्त करना।

सुगमकर्ता : तो क्या बच्ची के 'रमा ने चप्पल पहन ली' को 'रमा ने चप्पल पहनी' पढ़ देने से वाक्य के अर्थ में अन्तर आता है?

शिक्षक : नहीं।

सुगमकर्ता : फिर हम क्यों सुधार करवाना चाहते हैं?

शिक्षक : पर पढ़ा तो ग़लत ही है।

सुगमकर्ता : पर आप ही ने कहा था विचार व्याकरण से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है।

मेरे विचार

ऊपर लिखी बातचीत में आप देख सकते हैं कि समूह के उत्तरों में अन्तर्विरोध है। समूह ने कहा कि पढ़ने का उद्देश्य लिखित सामग्री से अर्थ प्राप्त करना है। बच्ची के एक शब्द को बदल देने से वाक्य का अर्थ नहीं बदलता है इसके बावजूद शिक्षक इस शब्द को बदल देने को ग़लती मान रहे हैं। दूसरी बात, समूह ने ये भी माना कि विचार ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है फिर छोटी-मोटी व्याकरण की त्रुटि पर हमें बच्चों को सुधार करवाने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए, विशेषकर वहाँ, जहाँ अर्थ में बदलाव नहीं आता है।

शिक्षक समूह के उत्तरों के पीछे कारण

आप यहाँ ऊपर देख सकते हैं कि सैद्धान्तिक तौर पर समूह की सहमति है कि विचार ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है, अर्थ प्राप्त करना पढ़ने का उद्देश्य है परन्तु इस सिद्धान्त का व्यवहारिकता में अमल नहीं दिखता है। तो अब सवाल है कि ये अन्तर्विरोध क्यों है। बहुत-से सिद्धान्तों को हम काफ़ी समय से सुनते आ रहे हैं और ये अनजाने

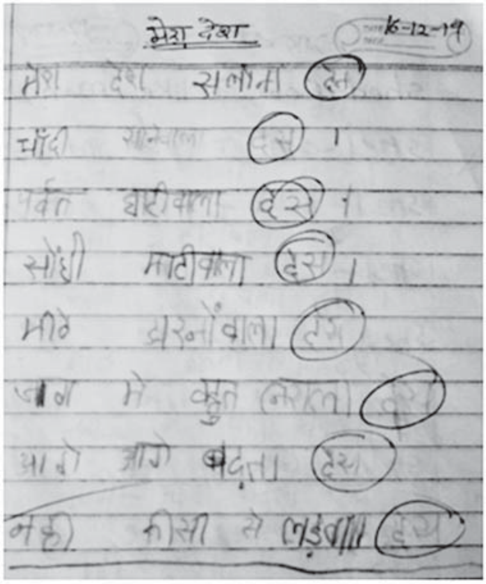
में ही हमारे स्वभाव का हिस्सा बन जाते हैं। इनमें से कुछ बातें सही प्रतीत होती हैं पर उनपर विचार किया जाए तो वे सही नहीं लगतीं या वे और बहुत-से प्रश्नों को जन्म देती हैं। उदाहरण के लिए, हम हमेशा से सुनते आए हैं कि बड़ों का आदर करो। इस वाक्य पर थोड़ा गहराई से सोचेंगे तो हमें लगेगा कि सिर्फ़ बड़ों का आदर करो, ऐसा क्यों? हम क्यों ये सुनते बड़े नहीं हुए कि सबका आदर करो? क्या हमें किसी का आदर सिर्फ़ उसकी उम्र देखकर करना चाहिए? यदि हम इस मान्यता को रखते हैं तो क्या हम बड़ों से किसी मुद्दे पर बातचीत की जगह को कम कर देते हैं? क्या ये मान्यता किसी और मान्यता को जन्मती है जैसे कि बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए हाथ उठाना सही है। साथ ही हम इस बात को भी मानते हैं कि हिंसा ग़लत है परन्तु बच्चों के साथ उनकी भलाई के लिए अपनाई जा सकती है।

मुझे लगता है कि समूह सिद्धान्तों को सतही तौर पर ही समझता है। समूह को सिद्धान्त पर गहराई से विचार करने की ज़रूरत है तभी सिद्धान्त और उसके प्रयोग में एकरूपता आएगी।

लेखन में ग़लतियाँ

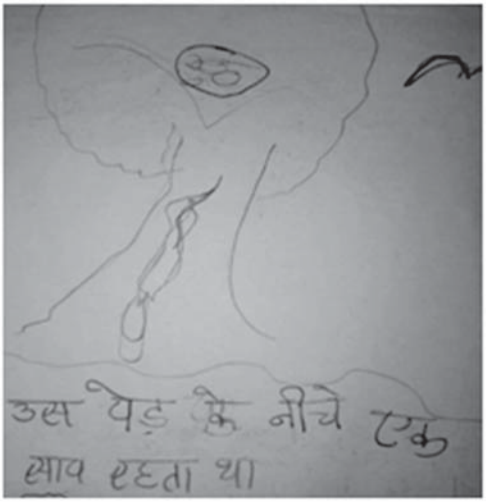
बहुत-से बच्चे लिखने में तरह-तरह की ग़लतियाँ करते हैं। इनमें बड़ी ई, छोटी इ, बड़ा ऊ, छोटा उ की ग़लतियाँ काफ़ी होती हैं। सामान्य तौर पर ग़लतियाँ सुधरवाने के लिए लाल पेन से गोला लगाने का तरीक़ा इस्तेमाल किया जाता है। ग़लत शब्द को सुधारकर कई-कई बार लिखने के लिए बच्चों को कहा जाता है।

आगे एक बच्चे की कॉपी में किया गया काम है। इसमें 'देश' शब्द पर 8 जगह गोले लगे हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि ग़लतियाँ 8 हैं या सिर्फ़ 1? क्या इतने गोले लगाने से बच्चे हतोत्साहित नहीं हो सकते हैं? यही व्यवहार हमारे साथ होगा तो हमें कैसा लगेगा? क्या इस पृष्ठ पर 'बाँसरी' ग़लत लिखा है? क्या आपको लगता है कि इसे तो 'बाँसुरी' लिखा जाना चाहिए था? ज़रा सोचिए, क्यों? क्या आपने किताबों में 'बाँसुरी' लिखा देखा है इसलिए? क्या किसी शब्द को सही और ग़लत बताने के लिए ये आधार काफ़ी है? फ़र्ज़ कीजिए, आप जिस क्षेत्र में रहते हैं वहाँ 'उँगली' को 'नुन्गली' कहते हैं और आप वही लिखते हैं तो



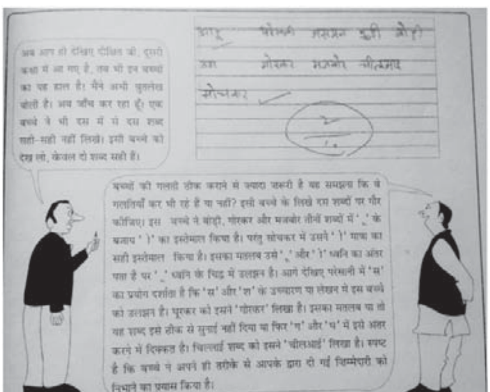


क्या वो ग़लत होगा? हर क्षेत्र में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनका उच्चारण थोड़ा बहुत अलग होता है, इसमें किसी एक को सही और बाक़ी को ग़लत





कहने की मान्यता की जड़ें अभिजात वर्ग के द्वारा बोली गई भाषा और उसकी सर्वग्राह्यता में हैं।



दो शिक्षकों के बीच संवाद

एक कहानी में बच्चे ने पहले 'साप' लिखा, पर आगे कहानी में 'साँप' की सही वर्तनी लिखी। ऐसा क्यों हुआ? इस तरह के और भी सवाल बच्चों के लेखन को पढ़कर हमारे मन में आना चाहिए ताकि हम ग़लतियों का विश्लेषण करके उनके मूल कारण तक पहुँच सकें।

लिखने की शुरुआत किताब में ग़लतियों के विश्लेषण को बख़ूबी दिखाया गया है।

गोले लगाने की प्रैक्टिस के पीछे की मान्यता

मान्यता यह है कि बच्चों को कुछ शब्द लिखने नहीं आते, तो उन शब्दों पर गोला लगाकर बच्चों का ध्यान उनकी त्रुटियों की ओर दिलाया जाएगा और उन शब्दों को लिखने का अभ्यास कराया जाएगा तो ग़लतियाँ ठीक हो जाएँगी। दूसरा कारण है कि ये तरीक़ा काफ़ी समय से स्कूलों में इस्तेमाल होता आ रहा है। शिक्षकों ने जब पढ़ाई की थी तब भी यही तरीक़ा इस्तेमाल होता था। शिक्षकों के स्वयं के बच्चे जिन स्कूलों में पढ़ते हैं, वहाँ भी ग़लती सुधरवाने के लिए उन्हें इसी तरह के काम दिए जाते हैं। कई बच्चों के माता-पिता भी बच्चों को किताब से देखकर सुलेख लिखने के लिए बोलते हैं।

मेरे विचार

गोला लगाकर, बार-बार अभ्यास से हमें बच्चों को सही लिखना सिखाने में कितनी सफलता मिली है ये हम स्कूलों के नतीजों से देख सकते हैं। मात्राओं की ग़लतियाँ न हों या कम हों, इसके लिए शिक्षक प्रश्न-उत्तर, निबन्ध, यहाँ तक कि नानी या दोस्त को पत्र में क्या लिखा जाए वो भी स्वयं श्यामपट्ट पर लिखवाते हैं या बच्चे गाइड से देखकर ये काम करते हैं।

यदि बच्चों को ख़ुद से अपने लिखे हुए को पढ़ने के लिए कहा जाए तो वे ख़ुद अपनी कुछ-कुछ ग़लतियाँ पहचानकर सुधार कर लेते

हैं। यदि हम ऊपर वाली मान्यता पर यह सोचें कि बच्चों को कुछ शब्द लिखने नहीं आते, इसलिए वे ग़लत लिख रहे हैं तो प्रश्न ये बनता है कि वे उसे ख़ुद पढ़कर कैसे सुधार ले रहे हैं।

लेखन में ग़लतियाँ न हों, इस सोच ने बच्चों के स्वतंत्र लेखन को ही कुचलकर रख दिया है। बिना देखे लिखने पर ग़लतियाँ होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए बच्चे कक्षा में लेखन के अभ्यास के नाम पर किताब के पाठ उतार रहे होते हैं। अकसर शिक्षक बच्चों को व्यस्त रखने के लिए भी किसी पाठ को उतारने के लिए दे देते हैं और इस काम से ये उम्मीद की जाती है कि बच्चे इस काम से बेहतर लिखना सीखेंगे।

मात्राओं पर काम करने के लिए कुछ सुझाव

- विज़ुअल मेमोरी
- लिखने की आदत का विकास करना

बड़ी ई, छोटी इ, बड़ा ऊ, छोटा उ की मात्राओं पर काम करने के लिए हम विज़ुअल मेमोरी पर काम कर सकते हैं। बहुत-से शब्द हम रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में लिखे देखते हैं। उन्हें लिखते वक़्त हमें ज़रा भी नहीं सोचना पड़ता कि उनमें छोटी इ या बड़ी ई, बड़ा ऊ या छोटा उ में से कौन-सी मात्रा लगेगी। उदाहरण के लिए, स्कूल और किताब जैसे शब्दों को लिखते वक़्त हम मात्राओं में परेशानी महसूस नहीं करते। कारण शायद आप समझ ही गए होंगे कि इन्हें हम बार-बार लिखा देखते हैं तो ये शब्द हमारी विज़ुअल मेमोरी का हिस्सा बन जाते हैं।

विज़ुअल मेमोरी का एक और उदाहरण देखते हैं। **'विद्‌यालय'** शब्द हमने इस तरह विद्यालय लिखा हुआ कई बार देखा है। एक शिक्षक का मत था कि सही विद्यालय ऐसे विद्यालय ही लिखते हैं। यदि हमने इस तरह विद्यालय को लिखा नहीं देखा होता तो हम ख़ुद से शायद इस तरह **विद्‌यालय** लिखते। वैसे भी इस तरह का द्य हम कम ही शब्दों में लिखा देख पाते हैं।

ऐसा ही एक और उदाहरण बुद्धि को लेकर दिया गया। 'बुद्धि', **बुद्‌धि** शब्द को लेकर तो समूह बँटा हुआ था कि सही कौन-सा है। छोटी-बड़ी मात्राओं के उच्चारण में अन्तर होता है। पर बच्चों के दृष्टिकोण से ये बड़ा ही सूक्ष्म अन्तर है। ऐसे में कक्षाओं में मात्राओं को सुधरवाने के लिए बड़े ही कृत्रिम तरीक़े से तितली, किताब, कीड़ा शब्दों का उच्चारण किया जाता है। परन्तु आम बोलचाल में इन शब्दों को सुनें, तो यह अन्दाज़ा लगाना कठिन होता है कि वक्ता ने किस स्वर (बड़ा / छोटा) का उच्चारण किया है। इसलिए बड़ी ई, छोटी इ, बड़ा ऊ, छोटा उ की ग़लतियाँ सुधारने के लिए हम विज़ुअल मेमोरी का इस्तेमाल भी कर सकते हैं।

हमें लिखने में बच्चों की ग़लतियाँ सुधारनी हैं तो ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चों को पढ़ने का मौक़ा देना होगा ताकि वे विज़ुअल मेमोरी के माध्यम से सही लिख पाने में सक्षम हो पाएँ। लिखना भी लिखकर ही आएगा, इसका तात्पर्य यह है कि हमें बच्चों को स्वतंत्र लेखन के बहुत-से अवसर उपलब्ध करवाने होंगे। और बच्चे लिखेंगे तब, जब उनकी कॉपी में गोले न लगे हों, अन्यथा बच्चे का ध्यान पूरी तरह से मात्राओं पर ही केन्द्रित हो जाएगा और विचार दिमाग़ से ग़ायब हो जाएँगे। लिखने हेतु बच्चों को प्रेरित करने के लिए उन्हें किसी भी विषयवस्तु पर अपने स्वयं के विचार लिखने के, अपने मन से कविता-कहानी के, डायरी लेखन के मौक़े देने होंगे। इससे बच्चों के लेखन में रचनात्मकता आएगी, वे सिर्फ़ किसी और के विचार अपनी कॉपी में नहीं लिख रहे होंगे और शिक्षक जान पाएँगे कि बच्चों के मन में क्या बातें चलती हैं, बच्चों के अपने विचार किस तरह के हैं। ये जानकारी शिक्षकों को बच्चों से बेहतर सम्बन्ध बनाने और बेहतर शिक्षण प्रक्रिया अपनाने में भी मदद करेगी।

विज़ुअल मेमोरी का इस्तेमाल आप किताबों में भी देख सकते हैं। नीचे दिया चित्र मध्यप्रदेश की *भाषा भारती* कक्षा 4 से लिया गया है।

शुद्ध रूप चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

(क) मैं .... नदी हूँ। (नमर्दा, र्नमदा, नर्मदा)

(ख) भारत में बहुत सी .... बहती हैं। (नदीया, नदियाँ, नँदिया)

(ग) यहाँ एक .... कुण्ड है। (प्राकतिक, प्रार्कतिक, प्राकृतिक)

(घ) पुनासा खण्डवा .... में है। (जीला, जिले, जिलों)

(ड़) जबलपुर की भूमि .... है। (उर्वरा, उवर्रा, उरवरा)

यहाँ आपको शायद देखकर ही समझ आ जाएगा कि सही वर्तनी कौन-सी है। बहुत-से शब्दों को जब हम कुछ गड़बड़ लिख देते हैं तो वे देखने में ही कुछ अटपटे लगते हैं। ये हमारे दिमाग़ में मौजूद उस शब्द की स्मृति से लिखे हुए शब्द के मेल न खाने के कारण होता है जिसे हम विज़ुअल मेमोरी कह रहे हैं।

भाषाविद रमाकांत अग्निहोत्री अपने लेख 'बच्चों के भाषा सीखने की क्षमता' में कहते हैं, "सच बात यह है कि आज की हिन्दी में 'इ' और 'ई' व 'उ' और 'ऊ' में कोई विशेष अन्तर नहीं रहा है।"

मुझे लगता है, क्या पता जैसे आज 'ष' की ध्वनि सुनने को नहीं मिलती है वैसे ही आने वाले समय में छोटे-बड़े स्वर का अन्तर ख़त्म हो जाए और हम एक ही मात्रा इस्तेमाल कर रहे हों? मैं ये मानती हूँ कि छोटी-बड़ी मात्रा लगाने से कहीं-कहीं अर्थ बदल जाता है, जैसे– 'आज के दिन मैंने बहुत-से दीन लोगों को देखा', परन्तु ज़्यादातर बोलचाल की भाषा में ऐसा नहीं होता है। यदि आप कोई 100 पन्नों की किताब हाथ में उठाएँगे तो आपको शायद ही कोई ऐसा वाक्य या अनुच्छेद मिले जिसमें एक ही शब्द में एक साथ एक छोटा और एक बड़ा स्वर इस्तेमाल हुआ हो, जैसे– दिन और दीन। मैंने जो वाक्य 'दिन' और 'दीन' को लेकर बनाया है वो भी कृत्रिम-सा लगता है। सच तो ये है कि यदि मैं लिखूँ, 'आज के दीन बड़ा मज़ा आया' या 'दिन लोगों को देखकर दया आती है', तो ग़लत मात्रा लगाने के बावजूद आप अर्थ तक पहुँच जाएँगे। आप अर्थ तक सन्दर्भ की मदद से पहुँच रहे होंगे। अर्थ तो पाठक और लेखक के बीच की अन्तर्क्रिया से बनता है जिसमें मुद्रित सामग्री के अलावा सन्दर्भ, लेखक और पाठक की विचारधारा भी मौजूद होती है।

मैं व्याकरण की दृष्टि से सही लिखे जाने के ख़िलाफ़ नहीं हूँ परन्तु शुरू से सही लिखने के आग्रह ने लेखन के मायने ही बदल दिए हैं। मैं जब स्कूल में पढ़ती थी तब 5वीं की बोर्ड परीक्षा में अच्छे नम्बर आएँ और मैं ज़िले में अव्वल स्थान प्राप्त करूँ, इसके लिए मेरी प्रधानाचार्य ने मुझसे बहुत बार दीपावली पर निबन्ध लिखवाया ताकि उसमें एक भी ग़लती न हो। अब यहाँ ज़रा ठहरकर सोचने की ज़रूरत है कि स्कूल में निबन्ध लिखवाया क्यों जाता है? निबन्ध की कोई सटीक परिभाषा लिखना कठिन है, पर हम यह कह सकते हैं कि निबन्ध किसी विषय पर थोड़ा विस्तार से अपने विचारों को प्रेषित करने का एक माध्यम है। निबन्ध चूँकि थोड़ा विस्तृत होता है इसलिए विचारों को व्यवस्थित करने की माँग रखता है। हममें ऐसे बहुत-से लोग होंगे जो कई बातों को बोलकर बता देंगे परन्तु जब उन्हें लिखकर देने की बात आएगी तो शायद न लिख पाएँ। क्या ये अजीब बात नहीं है कि हम अपने ही विचार लिखित में नहीं दे पा रहे हैं। शायद इसका कारण हम स्कूल में कराई गई गतिविधियों में पाएँगे। यदि मुझे भी स्कूल में ख़ुद से निबन्ध लिखने के मौक़े उपलब्ध कराए गए होते तो शायद आज मैं और भी बेहतर लिख पाती।

निष्कर्ष

शिक्षा का उद्देश्य हमें एक आलोचनात्मक नज़रिया प्रदान करना है परन्तु शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन बन गई है, इस वजह से हम समस्याओं को अलग-अलग नज़रियों से नहीं देख पाते हैं। इसका नतीजा है कि हम किसी समस्या के लिए अलग-अलग उपचार नहीं सोच पाते और वही तरीक़े इस्तेमाल करने

लगते हैं जो हमेशा से चले आ रहे हैं बिना इस बात की जाँच किए कि क्या ये तरीक़े उपयुक्त हैं। चर्चा में हमने देखा कि कैसे सिद्धान्त को तो हम मानते हैं, पर उसपर काम करने के दौरान हम अमल नहीं करते हैं। अकसर चर्चाओं में बहुत-सी बातों पर सहमति नज़र आती है परन्तु कक्षा में जाने पर हम कक्षाओं में वही पारम्परिक तरीक़े होते हुए पाते हैं। इसकी कई वजहें हैं जैसे कि परीक्षाओं का पैटर्न, अधिकारियों और शिक्षकों का मूल्यांकन करने का तरीक़ा, आदि। इस लेख में हमने पढ़ाने के तरीक़ों पर बात की है जिसका अन्ततः निचोड़ यह है कि हमें अपने पढ़ाने के तरीक़ों पर निरन्तर चिन्तन करने और बच्चों व उनके काम का सूक्ष्म अवलोकन करने की ज़रूरत है ताकि हम पीढ़ी-दर-पीढ़ी पढ़ने-पढ़ाने के चले आ रहे तरीक़ों को आलोचनात्मक दृष्टि से देख पाएँ, उनमें यथासम्भव बदलाव कर पाएँ और अपनी शिक्षण प्रक्रिया को जीवन्त बना पाएँ।

मीनू पालीवाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 2017 से काम कर रही हैं। आप फ़ेलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं। इससे पहले उन्होंने 6 वर्ष आईसीआईसीआई बैंक में काम किया। वे अपने मन में आने वाले सवालों की तलाश में शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ काम करना उन्हें अच्छा लगता है।

सम्पर्क : meenu.paliwal@azimpremjifoundation.org